8/7/20 - विभाग - हिन्दी नाम - साधना कुमारी

Time - 10:30 to 11:20

Lecture - 2

ईश्वर, जीव, सृष्टि (सृष्टि से संबंधित) आदि से संबंधित वर्णन है। 'आखिरी कलाम' में मृत्यु के बाद प्राणी की दशा का वर्णन है। 'चित्ररेखा' में चन्द्रपुर की राजकुमारी चित्ररेखा तथा कन्नौज के राजकुमार प्रीतम कुँवर के प्रेम की गाथा वर्णित है।

काव्यगत विशेषताएं - जायसी के काव्य प्रसिद्धि में 'पद्मावत' का सर्वश्रेष्ठ स्थान है। इसका बाह्य स्वरूप भारतीय है और आत्म रूप सूफी चिंतन। इसमें चित्तौड़ के रत्नसेन और सिंहलद्वीप की राजकुमारी पद्मिनी की प्रेम-कथा है, जिसमें सूफी प्रेम और दर्शन की झलक मिलती है। इसके सभी पात्र प्रतीकात्मक हैं। पद्मिनी ब्रह्म, रत्नसेन जीव, हीरामन तोता गुरु और नागमती माया के रूप में चित्रित है -

"तन चितउर मन राजा कीन्हा। हिय सिंघल, बुधि पद्मिनी चीन्हा॥"

"नागमती यह दुनिया धन्धा। बाँचा सोइ न एहि चित बंधा॥"

जायसी की प्रेम-पद्धति लौकिकता में अलौकिक सत्ता का संकेत देती है। इसकी लौकिकता के आधार पर नहीं हो सकती। पद्मिनी के सौन्दर्य वर्णन में कवि ने अलौकिकता का संकेत दिया है -

"रवि ससि नखत दिपहिं ओहि जोति। रतन पदारथ मानिक मोती॥"

जायसी का विरह वर्णन हिन्दी साहित्य में एक अद्वितीय वस्तु है। नागमती अपनी विरहावस्था में रानीपन को भूलकर, नारी मात्र का भाव व्यक्त करती है। उसका विरह हृदय के भाव को छूता है, मस्तिष्क की बुद्धि को नहीं। वह सामान्य नारी की तरह करती है -

"मघा बरसै झकोरी झकोरी। मोर दुइ नैन चुवैं जस ओरी॥"

अपने विरह वर्णन के लिए जायसी ने बारहमासे को अपनाया। जायसी का रहस्यवाद उल्लेख्य है। आचार्य शुक्ल ने कहा है कि "हिन्दी कवियों में अगर कहीं रमणीय और सुन्दर अद्वैती

रहस्यवाद है, तो जायसी में जिनकी भावुकता बहुत ही उच्च कोटि की है। वे सूफियों की भक्ति भावना के अनुसार कहीं तो परमात्मा को प्रियतम के रूप में देखकर जगत के नाना रूपों में उस प्रियतम के माधुर्य की छाया देखते हैं और सारे प्राकृतिक रूपों और व्यापारों का पुरुष के समागम हेतु प्रकृति के शृंगार, उत्कंठा या विरह विकलता के रूप में अनुभव करते हैं।"

जायसी का रहस्यवाद

रहस्यवाद दो प्रकार का होता है साधनात्मक और भावनात्मक। हमारे यहाँ योगमार्ग साधनात्मक रहस्यवाद है। जायसी ने उस रहस्यमयी सत्ता का आभास देने के लिए बड़े ही रमणीय और मर्मस्पर्शी दृश्य संकेत दिये हैं। इनका रहस्यवाद भावात्मक है। उस परोक्ष सत्ता की ज्योति और सौन्दर्य की ओर संकेत करते हुए कहते हैं —

"नयन जो देखा कमल भा, निरमल नीर शरीर।
हँसत जो देखा हंस भा, दसन जोति नगधीर॥"

जायसी का प्रेम काव्य रहस्यवादी सूफी-प्रेमकाव्य परंपरा में सर्वश्रेष्ठ तो है ही, अपने कलात्मक गुणों के उत्कर्ष के कारण हिन्दी काव्य में भी महान है। इनकी काव्य-कला अपने उत्कर्ष पर है।

इनकी काव्य भाषा अवधी है। इसमें प्रायः सभी रसों और छंदों का समावेश हुआ है। उपमा, उत्प्रेक्षा इनके प्रिय अलंकार हैं। प्रतीकात्मक तो चार चाँद लगा देती है। इनकी काव्यशैली का उत्कर्ष तुलसीदास में मिलता है।

अतः हम कह सकते हैं कि सूफी संतों के चिंतन को हिन्दी साहित्य में प्रतिष्ठापित करने वाले जायसी मध्यकालीन भक्तिकाल के अन्तर्गत निर्गुण धारा में प्रेमाश्रयी शाखा के प्रवर्तक हैं। इनका रहस्यवाद भावात्मक है। इनकी भाषा अवधी तथा शैली में प्रबंधात्मक है।